खापों की चौकसी और किसानों की वैज्ञानिक मेहनत का निडाना नगरी से "कृषि-कीटों को बचाने हेतु आगाज"!

निडाना नगरी (शहरी लोगों के लिए गाँव) जिला जींद में फसलों में पेस्टिसाइड के बेजाह इस्तेमाल को लगाम लगाने हेतु कल सर्वखाप महापंचायत हुई! मुझे गर्व है कि मेरा जन्म ऐसी पवित्र धरा पर हुआ है जो एक युग बदल देने वाले वैज्ञानिक आंदोलन की आगाजकर्ता है। उसी महापंचायत की विभिन्न मीडिया कवरेज आपसे साझी कर रहा हूँ!

लेकिन मुझे मीडिया वालों से "खाप" शब्द को इस सीधे काम में उतनी जोश से प्रयोग ना करने पर अफ़सोस है, जितना कि अगर यह कोई नकारात्मक खबर होती तो उस परिस्थिति में करते। देखिये कईयों ने कैसे हैडिंग में सिर्फ "महापंचायत" शब्द प्रयोग किया है। कोई हॉनर किलिंग या ऐसा ही उल्टा मामला क्यों ना हुआ होता, तपाक से "खाप" शब्द को पहले और वो भी बड़ा-बड़ा लिखते। खैर फिर भी साधुवाद!

जय यौद्धेय! जय दादा नगर खेड़ा! जय निडाना नगरी! - फूल मलिक!

महिलाएं कीटों को बांधती हैं राखी, तीज पर झुलाती हैं झूला

जींद में तीन गांवों की 90 महिलाएं हर साल करती हैं अनोखी खेत पाठशाला का आयोजन, इस बार होगी राज्य स्तर पर

कीटों को मानती हैं भाई, बोलीं - यह हमारी करते हैं सुरक्षा

सुशील भारद्वाज | (निडाना) जींद

मीना, सविता, शकुंतला सहित करीब 90 महिलाएं पिछले तीन साल से अनोखे अंदाज में त्योहार मनाती हैं। खेत पाठशाला के बाद मांसाहारी कीट हथजोड़ा, मटकू बुगड़ा को राखी का धागा बांधती हैं। तीज के त्योहार पर कीटों को झूला भी झुलाती हैं। सावन के महीने में सावन के गीत नहीं, यहां पर कीटों पर बनाए गए गीत गुनगुनाए जाते हैं। अबकी बार सावन के माह में ये गांव स्तर पर नहीं, बल्कि राज्य स्तर पर इस आयोजन को करने जा रही हैं। ताकि प्रदेश में कीटों को बेमौत मरने से बचाया जा सके। महिलाओं का दावा है कि कीटनाशकों के होने से फसल पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता।

जींद के निडाना, रधाना व ललित खेड़ा गांव की महिलाएं वर्ष 2012 से सावन के महीने में कीटों को बचाने के लिए विशेष आयोजन करती हैं। मीना व सविता कहती हैं अगस्त 2012 को निडाना में महिला किसान खेत पाठशाला चल रही थी। इसी दिन रक्षाबंधन का त्योहार भी था। करीब 90 बहनों ने हथजोड़ा व मटकू बुगड़ा को राखी का धागा बांधा था। साथ ही वचन दिया था कि न तो हम कीटनाशक का प्रयोग करेंगे और कीट हमारी कपास की फसल को महफूज रखने का काम करेंगे।

21 महिलाएं बनीं मास्टर ट्रेनर

तीनों गांवों की करीब 21 महिलाएं मास्टर ट्रेनर बन गई हैं। रधना, निडाना व ललित खेड़ा में अन्य महिलाओं को कीटों को लेकर जागरूक करती हैं। पैन, कापी, लैंस हाथ में लेकर पांच वर्ष में करीब 206 कीटों की पहचान कर चुकी हैं। इनमें 162 मांसाहारी व 43 शाकाहारी कीट शामिल हैं। खास बात यह है कि सभी कीटों के नाम हरियाणवी भाषा में रखे गए हैं, ताकि महिलाएं इन्हें आसानी से पहचान सकें। कहती हैं इन कीटों के होते हुए कीटनाशकों का छिड़काव करना जरूरी नहीं है।

खेत पाठशाला में कीटों की पहचान कराती महिला किसान। फोटो : भगवान दास

कीटों के मोमेंटो भी बनवाए

अबकी बार यह आयोजन गांव स्तर पर नहीं होगा, बल्कि इसे राज्य स्तर पर मनाने की तैयारी की जा रही है। सावन के महीने में 90 महिलाओं का यह ग्रुप 21 मास्टर ट्रेनर सहित बड़ा आयोजन करेगा। इसके लिए कीटों के मोमेंटो भी बनवाए जाएंगे। महिलाएं हरियाणा की करीब 35 लाख हेक्टेयर भूमि पर अधिक संख्या में खेती कार्य महिलाएं करती हैं, इसलिए इन्हें जागरूक करना जरूरी है।

महापंचायत का फैसला, बेजुबान कीटों को नहीं मारेंगे किसान

जींद में हुई देश की पहली महापंचायत, किसानों व कीटों के बीच की जंग में हुआ समझौता

विजेंद्र कादियान

गांव निडाना में शुक्रवार को किसानों और कीटों के बीच कई दशकों से चली आ रही जंग को लेकर खाप महापंचायत का आयोजन किया गया। खाप पंचायत में अध्यक्ष पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट के सेवानिवृत न्यायाधीश न्यायमूर्ति एसएन अग्रवाल, सदस्य देवेंद्र शर्मा और हरियाणा किसान आयोग के सदस्य सचिव डा. आरएस दलाल सहित लगभग 45 खापों के प्रतिनिधि शामिल हुए। महापंचायत के आरंभ में कीट विशेषज्ञ महिलाओं ने कीटों को बचाने को लेकर गीत गाए। महापंचायत में ज्यूरी द्वारा कीटों व किसानों के बीच समझौता करवा दिया गया। इसमें खाप महापंचायत और उस द्वारा नियुक्त ज्यूरी के सामने जहां कीटों ने खुद को निर्दोष बताया, वहीं किसान का पक्ष यह आया कि वह भोला था और इस कारण बिना वजह वह फसलों में कीटनाशक दवाओं का छिड़काव कर कीटों का सफाया करता रहा। ज्यूरी और खाप महापंचायत ने दोनों पक्षों के बीच समझौता करवाते हुए कहा कि आगे से किसान निर्दोष कीटों को नहीं मारेंगे। केंद्र सरकार से यह मांग की गई कि वह अपनी कृषि नीति में इस बात को शामिल करे कि कीटनाशक दवाओं का छिड़काव बिना वजह नहीं हो।

जींद। खाप महापंचायत में भाग लेते किसान और कीटों तथा किसानों के प्रतिनिधि।

दोनों तरफ का पक्ष रखा

शुक्रवार को जींद के निडाना गांव के एक निजी स्कूल में किसानों और कीटों के बीच दशकों से चली आ रही जंग में समझौता करवाने को लेकर खाप महापंचायत का आयोजन हुआ। महापंचायत में खाप पंचायतों के राष्ट्रीय संयोजक कुलदीप ढांडा, सुरेश कोथ, इंद्र सिंह ढुल, रामकरण सोलंकी आदि खासतौर पर शामिल हुए। निडाना के इस निजी स्कूल में किसानों का पक्ष जहां खुद किसानों ने रखा वहीं कीटों का पक्ष भी उन महिलाओं और पुरुषों ने रखा, जो पिछले कई साल से कपास और धान की फसल में कीटनाशक दवाओं के छिड़काव के बिना भी पूरी पैदावार ले रहे हैं और जिन्हें फसलों में मित्र और दुश्मन कीटों की पहचान अच्छी तरह से हो चुकी है। जब इन किसानों ने कीट बन कर महापंचायत और ज्यूरी के सामने अपना पक्ष रखा तो इसे सुन कर खापों के चौधरियों के साथ-साथ खुद ज्यूरी के अध्यक्ष पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट के सेवानिवृत न्यायाधीश न्यायमूर्ति एसएन अग्रवाल, सदस्य देवेंद्र शर्मा और हरियाणा किसान आयोग के सदस्य सचिव डा. आरएस दलाल भी हैरान रह गए। उन्हें भी लगा कि किसान ने बिना वजह इन बेजुबान कीटों को मौत के घाट उतारा है। जब किसानों का इसे लेकर पक्ष रखा गया तो इसमें बताया गया कि किसान को ज्ञान नहीं था। कई घंटे तक चली खाप महापंचायत में दोनों पक्षों को अच्छी तरह से सुना गया। बाद में खाप महापंचायत ने यह मामला ज्यूरी के सामने रखा।

- केंद्र सरकार से की जाएगी इसे कृषि नीति में शामिल करने की मांग
- पैतालिस खापों के प्रतिनिधि शामिल हुए

ज्यूरी ने करवाया दोनों पक्षों में समझौता

ज्यूरी के सामने किसान और कीट दोनों का पक्ष अच्छी तरह से रखे जाने के बाद जस्टिस एसएन अग्रवाल की अध्यक्षता वाली ज्यूरी ने मौके पर यह व्यवस्था दी कि कई दशकों से किसानों और कीटों के बीच चली आ रही जंग में कीट बिना कसूर मरता रहा और किसान अपने भोलेपन के चलते अपनी जेब ढीली कर बेजुबान और बेकसूर कीटों को मारता रहा। दोनों में किसी का दोष नहीं था। इसके चलते ज्यूरी ने दोनों पक्षों के बीच समझौता करवा दिया। इसमें किसान ने यह तय किया कि अब वह अपनी फसलों में बिना वजह अंधाधुंध तरीके से कीटनाशक दवाओं का छिड़काव नहीं करेगा। साथ ही महापंचायत ने केंद्र सरकार के लिए एक प्रस्ताव भी पारित किया जिसमें मांग की गई कि सरकार अपनी कृषि नीति में इस बात को शामिल करे की फसलों पर कीटनाशक दवाओं का अंधाधुंध छिड़काव नहीं हो।

न तो किसानों का कोई दोष और न कीटों का

जागरण संवाददाता, जींद : निडाना में शुक्रवार को सर्व जातीय सर्वखाप महापंचायत में खाप प्रतिनिधियों ने अनोखे मामले में किसान व कीट विवाद की सुनवाई की। खाप महापंचायत में कीटाचार्य किसानों ने बेजुबान कीटों की पैरवी की। लगभग तीन घंटे चली महापंचायत में खाप प्रतिनिधियों चौधरियों व न्यायिक कमेटी के सदस्यों ने कीटाचार्य किसानों से सवाल जवाब किए। इसके बाद न्यायिक कमेटी ने अपनी रिपोर्ट तैयार कर खाप प्रतिनिधियों को सौंपी। खाप प्रतिनिधियों ने मामले की बारीकी से सुनवाई करने तथा न्यायिक कमेटी की रिपोर्ट का अध्ययन करने के बाद मंच से आह्वान किया कि खाप पंचायत डॉ. सुरेंद्र दलाल के नाम से नई कृषि नीति बनाने, कीट ज्ञान की मुहिम को कृषि नीति में शामिल करने, डॉ. सुरेंद्र दलाल के नाम से अवार्ड जारी करने तथा दूसरे किसानों को प्रशिक्षित करने के लिए कीटाचार्य किसानों को मास्टर ट्रेनर के तौर पर नियुक्त करने के लिए केंद्र सरकार से मांग की जाएगी ताकि फसलों पर बिना वजह प्रयोग हो रहे जहर से मुक्ति दिलवाकर थाली को जहर मुक्त बनाया जा सके।

खाप पंचायत की अध्यक्षता जींद बहतरा के प्रधान केके मिश्रा ने तथा मंच संचालक सर्वजातीय सर्वखाप महापंचायत हरियाण के संयोजक एवं बराह खाप के प्रधान कुलदीप ढांडा ने की। महापंचायत की न्यायिक कमेटी में पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के सेवानिवृत्ति न्यायाधीश न्यायमूर्ति एसएन अग्रवाल, खाद्य एवं कृषि विश्लेषक डॉ. देवेंद्र शर्मा, हरियाणा किसान आयोग के सचिव डॉ. आरएस दलाल को शामिल किया गया था।

महापंचायत में कीटों का पक्ष उन महिलाओं और पुरुषों ने रखा, जो पिछले आठ वर्षों से कपास और धान की फसलों में कीटों पर शोध कर फसलों में बिना कीटनाशक दवाओं का प्रयोग किए अच्छी पैदावार ले रहे हैं। कीटाचार्य किसानों ने महापंचायत में बेजुबान कीटों की पैरवी करते हुए बताया कि कीट न तो हमारे मित्र हैं और न ही दुश्मन। कीट तो फसलों में अपना जीवन चक्र चलाने के लिए आते हैं और पौधे अपनी जरूरत के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार की गंध छोड़कर किसानों को अपनी रक्षा के लिए बुलाते हैं।

जींद में मित्र कीटों के लिए महापंचायत

14 गांवों की महिलाएं बनीं 'बायो कंट्रोल' की समर्थक

भास्कर न्यूज | जींद

निड़ाना में सर्वजातीय सर्वखाप महापंचायत में कृषक महिलाओं ने खेती के मित्र कीटों की जानकारियां दीं तो लगा वे 'एंटेमोलॉजिस्ट' से भी आगे हैं। शत्रु कीटों के जैवकीय नियंत्रण तथा प्रकृति में अहस्तक्षेप की झंडाबरदार बन उभरी हैं, 14 गांवों की ये महिलाएं।

महिलाओं ने मांसाहारी, शाकाहारी कृषि मित्र व शत्रु कीटों की जानकारी दी तो कृषि विशेषज्ञ आश्चर्य में पड़ गए। उन्होंने उनके शोध की तारीफ भी की। हरियाणा, पंजाब से आए किसानों ने एक ही मांग रखी- रासायनिक कीटनाशक उपयोग के बजाय 'बायो कंट्रोल' अपनाएं, 'फूड चेन' व्यवस्था में दखल न दिया जाए। ऐसा करना पर्यावरण और स्वास्थ्य दोनों के लिए हितकर है। खाप महापंचायत में संकल्प लिया गया कि सरकार देशभर में जहरमुक्त खाने की थाली के लिए अभियान चलाए। शेष पेज | 08 पर

तीसरा पक्ष उठा रहा फायदा

खाप महापंचायत इस निष्कर्ष पर पहुंची कि कीटों पर अत्याचार में न तो किसान और न ही कीटों का कोई दोष है। कोई तीसरा पक्ष किसान के भोलेपन का फायदा उठा रहा है। इसी कारण कीटनाशक के साथ जिंसों में जहर मिलता है, भोजन की थाली जहरीली हो जाती है। इसका असर विभिन्न बीमारियों के रूप में सामने है।

महापंचायत में फैसला

अभियान चलाकर थाली को जहरमुक्त बनाएंगे किसान

बिना वजह कीटनाशक दवाई का छिड़काव न करने पर एकमत

जींद, 20 फरवरी (का.प्र.): निडाना गांव में खाप महापंचायत के दौरान फैसला लिया गया कि कीटनाशक दवाई का छिड़काव फसलों पर बिना वजह न हो। पूरे देश में अभियान चला कर थाली को जहरमुक्त बनाया जाए।

खाप महापंचायत की अध्यक्षता बहतरा खाप के प्रधान के. के. मिश्रा ने की। महापंचायत में खाप पंचायतों के राष्ट्रीय संयोजक कुलदीप ढांडा, सुरेश कोथ, इंद्र सिंह दुल, रामकरण सोलंकी आदि खासतौर पर शामिल हुए।

निडाना के इस निजी स्कूल में किसानों का पक्ष जहां खुद किसानों ने रखा वहीं कीटों का पक्ष भी उन महिलाओं और पुरुषों ने रखा, जो पिछले कई साल से कपास और धान की फसल में कीटनाशक दवाई के छिड़काव के बिना भी पूरी पैदावार ले रहे हैं और जिन्हें फसलों में मित्र और दुश्मन कीटों की पहचान अच्छी तरह से हो चुकी है। किसानों ने कीट बनकर महापंचायत और ज्यूरी के सामने अपना पक्ष रखा तो इसे सुनकर खापों के चौधरियों के साथ-साथ खुद ज्यूरी के अध्यक्ष पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति एस. एन. अग्रवाल, सदस्य देवेंद्र शर्मा और हरियाणा किसान आयोग के सदस्य सचिव डा. आर. एस. दलाल भी हैरान रह गए।

खाप महापंचायत में भाग लेते किसान और कीटों तथा किसानों के प्रतिनिधि। (सुनील)

ज्यूरी के सामने किसान और कीट दोनों का पक्ष अच्छी तरह से रखे जाने के बाद जस्टिस एस. एन. अग्रवाल की अध्यक्षता वाली ज्यूरी ने मौके पर यह व्यवस्था दी कि कई दशकों से किसानों और कीटों के बीच चली आ रही जंग में कीट बिना कसूर मरता रहा।

इसके चलते ज्यूरी ने दोनों पक्षों के बीच समझौता करवा दिया। इसमें किसान ने यह तय किया कि अब वह अपनी फसलों में बिना वजह अंधाधुंध तरीके से कीटनाशक दवाई का छिड़काव नहीं करेगा।

खाप महापंचायत में हरियाणा के साथ-साथ पंजाब के किसानों ने भी भाग लिया। उत्तर भारत की 45 से ज्यादा खापों के प्रतिनिधि इस महापंचायत में शामिल हुए।

सर्वजातीय सर्वखाप महापंचायत में कीटाचार्यों ने चौधरियों के समक्ष रखा कीटों का पक्ष

किसान-कीट लड़ रहे, तीसरा उठा रहा फायदा

खापों ने कीटों और कीटनाशक इस्तेमाल करने वाले किसानों में किया समझौते का प्रयास

तीन घंटे चली पंचायत, कीटाचार्यों ने सरकार से की कीट ज्ञान की मुहिम को कृषि नीति में शामिल करने की मांग

महापंचायत में मंच पर मौजूद खाप प्रतिनिधि, महिलाएं और हरियाणा एवं पंजाब हाईकोर्ट के सेवानिवृत जज एसएन अग्रवाल, हरियाणा किसान आयोग के सदस्य सचिव डॉ. आरएस दलाल और डॉ. देवेंद्र शर्मा।

अमर उजाला ब्यूरो

निडाना गांव में शुक्रवार को हुई अनोखी सर्वजातीय सर्वखाप महापंचायत

न्यायिक कमेटी ने अपनी रिपोर्ट तैयार कर खाप प्रतिनिधियों को सौंपी

जींद। निडाना गांव में शुक्रवार को हुई अनोखी सर्वजातीय सर्वखाप महापंचायत में खाप चौधरियों ने अनोखे एवं अद्भुत मामले में किसान और कीट विवाद की सुनवाई की। खाप महापंचायत में कीटाचार्य किसानों ने बेजुबान कीटों पैरवी की। निडाना गांव के डेफोडिल्स पब्लिक स्कूल में तीन घंटे चली महापंचायत में खाप चौधरियों और न्यायिक कमेटी के सदस्यों ने कीटाचार्य किसानों से सवाल जवाब किए। इसके बाद न्यायिक कमेटी ने अपनी रिपोर्ट तैयार कर खाप प्रतिनिधियों को सौंपी।

खाप प्रतिनिधियों ने मामले की गहनता से सुनवाई करने और न्यायिक कमेटी की रिपोर्ट का अध्ययन करने के बाद मंच से आह्वान किया कि खाप पंचायत डॉ. सुरेंद्र दलाल के नाम से नई कृषि नीति बनाने, कीट ज्ञान की मुहिम को कृषि नीति में शामिल करने, डॉ. सुरेंद्र दलाल के नाम से अवार्ड जारी करने और दूसरे किसानों को प्रशिक्षित करने के लिए कीटाचार्य किसानों को मास्टर ट्रेनर के तौर पर नियुक्त करने के लिए केंद्र सरकार को पत्र लिखकर मांग करेगी। ताकि फसलों पर बिना वजह प्रयोग हो रहे जहर से मुक्ति दिलवाकर थाली को जहरमुक्त बनाया जा सके। महापंचायत में खाप प्रतिनिधियों ने किसानों से फसलों में कीटनाशक का प्रयोग नहीं करने का आह्वान कर किसान-कीट विवाद में समझौते का प्रयास किया।

खाप पंचायत की अध्यक्षता जींद बेहतरा के प्रधान केके मिश्रा ने और मंच संचालक सर्वजातीय सर्वखाप महापंचायत हरियाणा के संयोजक एवं बराह खाप के प्रधान कुलदीप ढांडा ने की। महापंचायत की न्यायिक कमेटी में पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश एसएन अग्रवाल, खाद्य एवं कृषि विश्लेषक डॉ. देवेंद्र शर्मा, हरियाणा किसान आयोग के सचिव डॉ. आरएस दलाल शामिल रहे। महापंचायत में जिला कृषि उपनिदेशक डॉ. रामप्रताप सिहाग, हिसार के जिला बागवानी अधिकारी डॉ. बलजीत भाण, जींद के जिला उद्यान अधिकारी डॉ. रविंद्र ढांडा व स्वर्गीय डॉ. सुरेंद्र दलाल की पत्नी कुसुम दलाल भी मौजूद रही।

किसानों और कीटों के बीच पिछले चार दशकों से चली आ रही लड़ाई की सुलह करवाने को लेकर खाप महापंचायत का आयोजन किया गया। इस महापंचायत में किसानों का पक्ष जहां खुद किसानों ने रखा वहीं कीटों का पक्ष भी उन महिलाओं और पुरुषों ने रखा, जो पिछले लगभग आठ वर्षों से कपास और धान की फसलों में कीटों पर शोध कर रहे हैं और फसलों में बिना कीटनाशक दवाओं का प्रयोग किए अच्छी पैदावार ले रहे हैं। कीटाचार्य किसानों ने महापंचायत में बेजुबान कीटों की पैरवी कर बताया कि कीट न तो किसान के मित्र हैं और न ही दुश्मन हैं।

कीट तो फसलों में अपना जीवन चक्र चलाने के लिए आते हैं और पौध अपनी जरूरत के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार की गंध छोड़कर किसानों को अपनी रक्षा के लिए बुलाते हैं। उन्होंने बताया कि उनके आठ वर्षों के अनुभव के दौरान कभी की कोई कीट फसल में नुकसान पहुंचाने के आर्थिक स्तर को पार नहीं कर पाया है। जब कीट हमारी फसलों को कोई नुकसान नहीं पहुंचा रहे हैं तो फिर उन्हें बिना कसूर किसानों द्वारा फसलों में कीटनाशक दवाओं का छिड़काव कर क्यों मारा जा रहा है। उन्होंने बताया कि किसान व कीट की इस लड़ाई में बेजुबान कीटों की जान मुफ्त में जा रही है और इसमें किसान की जेब भी ढीली हो रही है। फसलों में अधिक जहर का प्रयोग होने से हमारा खानपान भी दूषित हो रहा है। इसका मानव स्वास्थ्य पर काफी बुरा प्रभाव पड़ रहा है। कीटाचार्य किसानों के कीट ज्ञान को सुन कर खापों के चौधरियों के साथ-साथ खुद न्यायिक कमेटी के अध्यक्ष पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश एसएन अग्रवाल, सदस्य देवेंद्र शर्मा और हरियाणा किसान आयोग के सदस्य सचिव डॉ. आरएस दलाल भी हैरान रह गए। उन्हें भी लगा कि बिना वजह बेजुबान कीटों को मौत के घाट उतारा जा रहा है। खाप चौधरियों व न्यायिक कमेटी ने जब अन्य किसानों इसे लेकर सवाल किए तो किसानों ने बताया गया कि उन्हें कीटों के बारे में इस तरह की जानकारी नहीं थी। वह तो अज्ञानतावश फसल में नुकसान के डर से इन बेजुबान कीटों को मार रहे हैं। दोनों पक्षों की सुनवाई के बाद न्यायिक कमेटी व खाप इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इस लड़ाई में न तो किसानों का दोष है और न ही कीटों का कोई तीसरा पक्ष किसानों के भोलेपन का फायदा उठाकर इस लड़ाई को बढ़ावा दे रहा है।

रिपोर्ट तैयार कर केंद्र सरकार से की जाएगी सिफारिश

जींद जिले के कीटाचार्य किसानों ने कीटों पर एक अनोखा शोध कर कृषि वैज्ञानिकों को भी पीछे छोड़ दिया है। इन किसानों को कीटों के बारे में काफी गहराई तक जानकारी है। यहां आकर इन किसानों से यह सीखने को मिला कि किस तरह मांसाहारी कीट शाकाहारी कीटों को चिन्हित करते हैं। हिंदुस्तान के छोटे से गांव में कीटों पर इस तरह का काम हो रहा है यह देख कर मैं दंग रह गया। कीट भी परमात्मा की देन हैं। इसलिए इन्हें भी बचाया जाना चाहिए। प्रकृति ने जो सिस्टम बनाया है किसान पेस्टीसाइड का प्रयोग कर उस सिस्टम के साथ छेड़खानी कर रहे हैं। पेस्टीसाइड मानव स्वास्थ्य के लिए बेहद हानिकारक है। जींद जिले के किसानों के इस काम को कृषि नीति में शामिल करने, डॉ. सुरेंद्र दलाल के नाम से अवार्ड जारी करवाने, इन किसानों को विशेष सुविधाएं दिलवाने के लिए एक रिपोर्ट तैयार कर केंद्र सरकार से सिफारिश की जाएगी। इसे लागू करना या ना करना सरकार का काम है।

- एसएन अग्रवाल, सेवानिवृत्त न्यायाधीश, हरियाणा एवं पंजाब हाईकोर्ट

सर्वजातीय सर्वखाप महापंचायत में खाप प्रतिनिधि रहे मौजूद

सर्वजातीय सर्वखाप महापंचायत हरियाणा की महिला विंग की प्रधान डॉ. संतोष दहिया, अखिल भारतीय जाट महासभा के प्रधान ओमप्रकाश मान, कंडेला खाप प्रधान टेकराम कंडेला, पालम 360 के प्रधान रामकर्ण सौलंकी, राठी खाप के प्रधान डॉ. रणबीर राठी, बूरा खाप के वरिष्ठ उपप्रधान दयानंद बूरा, नंदगढ़ (चुदाली) गांव के प्रधान होशियार सिंह दलाल, कुंडू, कालवा खाप के प्रधान सुभाष कुंडू, मंडाल तपा के प्रधान जगबीर दूल, महम चौबीसी के प्रधान मेहर सिंह नंबरदार, दहिया खाप के प्रधान प्रताप सिंह, झाड़सा 360 गुड़गांव के प्रधान महेंद्र सिंह ठाकरान, सतरोल खाप के प्रधान सूबेदार इंद्र सिंह, राखी बारहा खाप के प्रधान सुरेश कोथ, हाट बारहा खाप के प्रधान दयानंद, किनाना बारहा खाप के प्रधान दरिया यैनी, प्रगतिशील किसान क्लब के प्रधान राजबीर कटारिया, नगूरा बारहा खाप के प्रधान राजेंद्र दलाल, ढांडा खाप के प्रतिनिधि ओमप्रकाश ढांडा, किसान सभा हरियाणा के उपाध्यक्ष कामरेड फूल सिंह श्योकंद, खरकरामजी खाप के प्रधान सत्यवान, सफीदों बारहा के प्रधान रणबीर देसवाल, चहल खाप के संरक्षक दलीप सिंह चहल, कुंडू बारहा के प्रधान महाबीर कुंडू, लोहचब खाप के प्रधान ईश्वर लोहचब सहित लगभग 60 खापों के प्रतिनिधि मौजूद थे।

कीटों ने दी किसानों को खुली चुनौती, उन्हें मारकर नहीं जीत पाएंगे किसान

जींद। निडाना गांव के एक निजी स्कूल में आयोजित हुई सर्वजातीय सर्वखाप महापंचायत में खाप चौधरियों द्वारा किसानों और कीटों की लड़ाई में समझौते का प्रयास किया गया। आठ वर्षों से कीट ज्ञान की मुहिम से जुड़े कीटाचार्य किसानों ने खाप महापंचायत में बेजुबान कीटों का पक्ष रखा। सामाजिक, न्यायिक व वैज्ञानिक मार्गदर्शन लेने के लिए खाप चौधरियों ने महापंचायत में न्यायिक कमेटी का गठन भी किया। हरियाणा एवं पंजाब हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश एसएन अग्रवाल को इस कमेटी का चेयरमैन बनाया गया, वहीं हरियाणा किसान आयोग के सदस्य सचिव डॉ. आरएस दलाल व खाद्य एवं कृषि विश्लेषक डॉ. देवेंद्र शर्मा को कमेटी सदस्य बनाया गया। कीटों ने किसानों को खुली चुनौती देकर कहा कि किसान उन्हें जहर से मारकर कभी भी जीत नहीं पाएंगे। कीटाचार्य किसानों ने कीटों की तरफ से पक्ष रखते हुए बताया कि यदि किसान इसी तरह अंधाधुंध कीटनाशकों का प्रयोग करते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब उनकी आने वाली पीढ़ियों को इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे।

पौधे और शाकाहारी कीटों का है गहरा रिश्ता

ईसराह गांव के पुरुष किसानों ने रस चूसक कीटों का पक्ष रखते हुए बताया कि यह कीट तो पौधे का बचा हुआ रस चूसकर पौधे की मदद करते हैं। जिस तरह रक्तदान करने से मनुष्य के शरीर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता उसी प्रकार पौधे का रस चूसने से पौधे पर भी कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता। निडाना गांव के पुरुष किसानों ने पत्तेखाने वाले कीटों की पैरवी करते हुए बताया कि पत्ते खाने वाले कीट ऊपर के पत्तों में छोटे-छोटे सुराख कर देते हैं। इससे नीचे के पत्तों तक भी धूप पहुंच जाती है और नीचे के पत्ते भी पौधे के लिए भोजन बना देते हैं। ईसराह के किसानों ने फूलाहारी कीटों का पक्ष रखते हुए बताया कि कीट तो फसल में पर परागण में सहायता करते हैं। कीटों की सहायता से ही फूल के नर भाग के परागकण मादा तक पहुंच पाते हैं। रधाना गांव के किसानों ने फलाहारी कीटों का पक्ष रखते हुए बताया कि कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार पौधा अपना 65 प्रतिशत फल गिरा देता है और इसी फल को खाकर यह कीट पौधे की मदद करते हैं।

छोटे-छोटे बच्चों में जो तनाव व अन्य बीमारियां पनप रही हैं। वह सब पेस्टीसाइड की ही देन है। आत्महत्या व मर्डर के बढ़ते मामलों का कारण पेस्टीसाइड ही है। इसलिए किसानों को पेस्टीसाइड का प्रयोग बंद करना चाहिए। खाप पंचायत किसानों को जागरूक करने के लिए महिम चलाएगी। सभी खाप प्रतिनिधियों से संपर्क कर अपने क्षेत्र के आस-पास के किसानों को जागरूक करने का प्रयास किया जाएगा।

- डॉ. संतोष दहिया, प्रदेशाध्यक्ष, सर्वजातीय सर्वखाप महापंचायत, हरियाणा

कीटनाशक के कारण हमारी आने वाली पीढ़ियों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। आने वाली पीढ़ियों को बचाने के लिए खाप पंचायतों को इस क्षेत्र में हस्तक्षेप करना होगा। किसानों को जागरूक करने के लिए उनके द्वारा अपने क्षेत्र में विशेष अभियान चलाया जाएगा। किसानों को कीटों के बारे में जागरूक किया जाएगा।

- डॉ. रणबीर राठी, प्रधान, राठी खाप

अमर उजाला भी बना भागेदार

जहर मुक्त थाली के लिए निडाना गांव के किसानों द्वारा चलाए जा रहे अभियान में अमर उजाला भागेदार बना। अमर उजाला फाउंडेशन द्वारा महिलाओं की खेत पाठशाला लगवाई गई। इसके परिणाम स्वरूप प्रदेश भर में और अन्य कई राज्यों के किसान इस मुहिम से जुड़े हैं। अमर उजाला द्वारा कीटों की पहचान करने के लिए विशेष अभियान भी चलाया गया है। इसके बाद प्रदेश के कई हिस्सों से खेत पाठशाला शुरू करने की मांग आई है और इस पर कृषि विभाग भी गंभीरता से विचार कर रहा है।

एक साल में 20 करोड़ रुपए का कीटनाशकों का कारोबार

खाप महापंचायत की मुहिम रंग लाई तो किसान होगा मालामाल

- थाली को भी जहरमुक्त बनाने में मिलेगी मदद
- इस धंधे से जुड़े लोगों को जरूर होगी दिक्कत

जींद, 20 फरवरी (का.प्र.): कपास और धान की फसल को कीटों से होने वाले नुक्सान को रोकने के लिए किसानों द्वारा इन फसलों पर कीटनाशक दवाइयों के छिड़काव को रोकने को लेकर शुक्रवार को जींद के निडाना गांव में हुई खाप महापंचायत का फैसला प्रभावी साबित हुआ तो जींद जिले में करोड़ों रुपए के कीटनाशक दवाई के कारोबार को बड़ा झटका लगेगा। यह उन मल्टीनैशनल कम्पनियों के लिए भी बड़ा झटका होगा, जो किसानों को कीटनाशक दवाई बेचकर पूरे प्रदेश से अरबों रुपए हर साल अपनी तिजौरी में भर रही हैं। इसके साथ ही अभियान की सफलता से थाली को जहरमुक्त बनाने में भी मदद मिलेगी। यह खुद खाप पंचायतों के किसानों पर असर को भी साबित करेगा। शुक्रवार को जींद के निडाना गांव के एक निजी स्कूल में पूरी अदालत जैसी व्यवस्था की गई थी। इसमें एक तरफ खुद किसान बैठा था, जो दशकों से कपास और धान की अपनी फसल को कीड़ों के प्रकोप से बचाने के लिए फसलों पर कीटनाशक दवाई का अंधाधुंध छिड़काव करता आ रहा है। उसके सामने फसलों पर मंडराने वाले कीटों के प्रतिनिधि के रूप में उनके ही किसान भाई बैठे हुए थे। किसान के सामने यह बात रखी गई कि वह बिना वजह फसलों पर कीटनाशक दवाई का छिड़काव कर बेजुबान और निर्दोष कीटों को मार रहा है। इसमें खुद किसान का बहुत पैसा बेकार जा रहा है। किसान को यह बात समझ आ गई और उसने मान लिया कि वह अब कपास और धान की फसल पर कीटनाशक दवाई का अंधाधुंध छिड़काव नहीं करेगा।

साइड स्टोरी

भोला किसान और बेजुबान कीट दोनों निर्दोष : ढांडा

खाप महापंचायत के संयोजक कुलदीप ढांडा ने शुक्रवार को निडाना में कीटों को लेकर देश की पहली ऐसी खाप महापंचायत और महापंचायत द्वारा गठित ज्यूरी के सामने कहा कि कई घंटे की सुनवाई के बाद खाप महापंचायत इस निष्कर्ष पर पहुंची की किसानों और कीटों के बीच दशकों से चली आ रही जंग में कसूर न तो किसान का था और न ही कीटों का। किसान को ज्ञान नहीं था और उसके भोलेपन का फायदा उठाकर किसी तीसरी ताकत ने बेजुबान कीटों को बिना वजह मरवाया। इसमें मुनाफा उस तीसरी ताकत को ही हुआ।

खाप महापंचायत में कीटों का पक्ष रखते वक्ता। (सुनील)

अभियान सफल हुआ तो टूट जाएगी 20 करोड़ के कारोबार की कमर

जहरमुक्त थाली के तहत किसानों और कीटों के बीच दशकों से चली आ रही जंग में शुक्रवार को निडाना में खाप महापंचायत द्वारा करवाया गया समझौता सफल रहा तो अकेले जींद जिले में कीटनाशक दवाई के 20 करोड़ रुपए के कारोबार की कमर पूरी तरह टूट जाएगी। जींद जिले में अकेले कपास और धान की फसल में एक साल में 20 करोड़ रुपए से भी ज्यादा कीमत की कीटनाशक दवाई का इस्तेमाल किसान कर डालते हैं।

खुद खाप पंचायतों के असर की भी होगी अग्निपरीक्षा

शुक्रवार को जिस तरह पूरे उत्तर भारत की 45 से ज्यादा खाप पंचायतों ने प्रस्ताव पारित कर किसानों को फसलों में कीटनाशक दवाई का छिड़काव नहीं करने को कहा है, उससे अब खुद खाप महापंचायतों के असर की भी अग्निपरीक्षा होगी। खाप पंचायतों का ज्यादा असर गांवों में और वह भी किसान वर्ग में माना जाता है। अगर किसान फसलों में कीटनाशक दवाई का छिड़काव बंद कर देते हैं तो यह माना जाएगा कि खाप पंचायतों का हकीकत में लोगों पर काफी असर है। अगर इसके विपरीत किसान फसलों पर इसी तरह कीटनाशक दवाई का छिड़काव करते हैं तो फिर यह माना जाएगा कि खाप पंचायतों का असर ऐसे मामलों में किसानों पर नहीं है।

जज बनीं खापें, अनोखी अदालत में किसानों ने दी कीटों की सफाई

निडाना में खापों ने किसानों व कीटों के बीच हुई बहस के बाद निकाला जहरमुक्त थाली के लिए समाधान

शिवकुमार गौड़ | जींद

जींद से 12 किलोमीटर दूर स्थित निडाना गांव के एक निजी स्कूल में सजे पंडाल के बीच एक अनोखी अदालत लगाई गई। जज की कुर्सी पर रिटायर्ड जज भले ही रहे हों लेकिन चारों तरफ बैठे विभिन्न खापों के प्रतिनिधि जो इस अदालत के असली जज बनकर पधारे थे। कीटाचार्य अपनी दलीलें खापों के सामने पेश कर रहे थे। निडाना गांव के डेफोडिल्ज स्कूल में किसानों व कीटों के बीच पिछले कई दशकों से चल रही जंग के समाधान के लिए खापों की महापंचायत हुई। इस महापंचायत की विशेष बात यह रही कि मित्र कीटों के पक्ष में महिलाओं ने भी खाप प्रतिनिधियों के समक्ष अपना वक्तव्य रखे। इसमें करीब 50 से अधिक खापों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

जींद. पूर्व न्यायमूर्ति एसएन अग्रवाल को कीटों की पहचान करातीं महिला किसान।

चार घंटे चली बहस व चर्चा

अनोखी अदालत में करीब चार घंटे तक माथापच्ची हुई। सुबह 11 बजे से शुरू हुई इस महापंचायत में पहले खापों ने किसानों व कीटों के पक्षों की सुनवाई की और बाद में मंच पर मौजूद पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के रिटायर्ड न्यायामूर्ति एसएन अग्रवाल व कृषि विभाग अधिकारियों व वैज्ञानिकों से सलाह मशविरा कर खाप प्रतिनिधियों ने समाधान निकाला कि हमें जहरमुक्त भोजन, वातावरण व बीमारियों से बचने लिए पेस्टीसाइड से फसलों के कीटों पर हमला रोकना होगा।

गीतों के माध्यम से मांगीं कीटों की सलामती

महिला किसानों ने अदालत में कीटों से संबंधित तैयार किए गीतों को सुनाकर कीटों की सलामती की गुहार खापों से की। मास्टर ट्रेनर सविता, मीना, राजवंती, अंग्रेजो, कमलेश आदि ने गीतों के माध्यम से फसलों में होने वाले कीटों को बेजुबान व असहाय बताया। गीतों की लाइनों के माध्यम से समझाया कि किस प्रकार ये मित्रकीट किसानों को लाभ पहुंचाते हैं। मगर भोला भाला किसान बिना जागरूकता के इन पर जहर छिड़ककर इन्हें मार रहा है। गीतों के माध्यम से संदेश दिया कि हमें प्रकृति पर भरोसा करना चाहिए, क्योंकि उन्होंने फसलों को बचाने के लिए शाकाहारी के साथ मांसाहारी कीट भी पैदा किए हैं। महापंचायत के बाद सभी आए लोगों ने देसी घी का हलवा, रोटी व सब्जी का स्वाद चखा।

कीटों पर बनाए गीत सुनातीं महिला किसान।

जुड़ रहे हैं किसान

कृषि विशेषज्ञ डॉ. सुरेंद्र दलाल ने वर्ष 2008 में निडाना गांव से कीट साक्षरता मिशन की शुरूआत की थी। पहले कुछ किसानों को जोड़कर कीटों के लाभ व हानि के बारे में बताया। वर्ष 2010 में महिला खेत पाठशाला की शुरूआत की, जिससे निडाना के साथ साथ आसपास के गांवों की महिलाएं भी इससे जुड़ती गईं। जिनमें ललितखेड़ा, रधाना, निडानी आदि में महिला खेत पाठशाला शुरू हो गई। फिलहाल 100 के करीब महिलाएं इस मिशन से जुड़कर मास्टर ट्रेनर बनी हैं। इसके अलावा दो सौ के करीब किसान मिशन से जुड़ रहे हैं।

कृषि विशेषज्ञ डॉ. सुरेंद्र दलाल ने इन कीटों की दिनचर्या पर शोध कराया तो सामने आया कि मांसाहारी कीट फसल को नुकसान पहुंचाने वाले कीटों का भक्षण करते हैं। मगर पेस्टीसाइड छिड़ककर किसान इन मित्र कीटों को मार रहा है। इससे थाली में जहर मिलावट वाला खाना परोसा जा रहा है।'

-सविता देवी, ट्रेनर, कीट साक्षरता मिशन।

खाप प्रतिनिधि आज के बच्चे जो जरा सी बात पर उतेजित हो जाते हैं, वो पेस्टीसाइड का नतीजा है। हम जहरयुक्त खाना खा रहे हैं। यहां के किसानों व महिलाओं ने जो जहरमुक्त थाली बनाने का अभियान चलाया है वह सराहनीय कार्य है।'

-संतोष दहिया, प्रधान दहिया खाप (महिला) हरियाणा।

कुदरत ने संतुलन बनाने के लिए फसलों में मांसाहारी व शाकाहारी कीट पैदा किए हैं। फसल को नुकसान पहुंचाने वाले शाकाहारी कीटों को रोकने में मांसाहारी कीट सहयोग करते हैं। बिना जागरूकता के किसान इन पर जहर स्प्रे कर रहा है।'

-मीना मलिक, ट्रेनर, कीट साक्षरता मिशन

अधिक उत्पादन के लिए किसानों द्वारा अंधाधुंध पेस्टीसाइड का इस्तेमाल लोगों के स्वास्थ्य पर विपरीत असर डाल रहा है। कैंसर जैसी असाध्य बीमारियां इसका नतीजा है। स्वर्गीय डॉ. सुरेंद्र दलाल द्वारा चलाई मुहिम को किसानों को बढ़ाना चाहिए।'

-डॉ. रणबीर राठी, प्रधान राठी खाप

खाप पंचायतें करेंगी नई कृषि नीति बनाने की केंद्र से मांग

■ जहर मुक्त थाली बनाने की तरफ बढ़ाएंगे कदम ■ सर्वजातीय सर्वखाप महापंचायत संपन्न

जींद, 20 फरवरी (सतीश) : जिले के निडाना गांव में शुक्रवार को आयोजित हुई सर्वजातीय सर्वखाप महापंचायत में खाप चौधरियों ने अनोखे एवं अद्भूत मामले किसान व कीट विवाद की सुनवाई की। खाप महापंचायत में कीटाचार्य किसानों ने बेजुबान कीटों पैरवी की। लगभग तीन घंटे चली महापंचायत में खाप चौधरियों व न्यायिक कमेटी के सदस्यों ने कीटाचार्य किसानों से सवाल जवाब किए। इसके बाद न्यायिक कमेटी ने अपनी रिपोर्ट तैयार कर खाप प्रतिनिधियों को सौंपी।

खाप प्रतिनिधियों ने मामले की बारिकी से सुनवाई करने तथा न्यायिक कमेटी की रिपोर्ट का अध्ययन करने के बाद मंच से आह्वान किया कि खाप पंचायत डा. सुरेंद्र दलाल के नाम से नई कृषि नीति बनाने, कीट ज्ञान की मुहिम को कृषि नीति में शामिल करने, डा. सुरेंद्र दलाल के नाम से अवार्ड जारी करने तथा दूसरे किसानों को प्रशिक्षत करने के लिए कीटाचार्य किसानों को मास्टर ट्रेनर के तौर पर नियुक्त करने के लिए केंद्र सरकार से मांग की जाएगी, ताकि फसलों पर बिना वजह प्रयोग हो रहे जहर से मुक्ति दिलवाकर थाली को जहरमुक्त बनाया जा सके। खाप पंचायत की अध्यक्षता जींद बेहतरा के प्रधान के.के. मिश्रा ने तथा मंच संचालक सर्वजातीय सर्वखाप महापंचायत हरियाण के संयोजक एवं बराह खाप के प्रधान कुलदीप ढांडा ने की। महापंचायत की न्यायिक कमेटी में पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के सेवानिवृत्ति न्यायधीश न्यायमूर्ति एस.एन. अग्रवाल, खाद्य एवं कृषि विशलेषक डा. देवेंद्र शर्मा, हरियाणा किसान आयोग के सचिव डा. आरएस दलाल को शामिल किया गया था।

▲ जस्टिस एस.एन. अग्रवाल अपनी रिपोर्ट देते हुए।

महापंचायत में जिला कृषि उपनिदेशक डा. रामप्रताप सिहाग, हिसार के जिला बागवानी अधिकारी डा. बलजीत भ्याण, जींद के जिला उद्यान अधिकारी डा. रविंद्र ढांडा, मैडम कुसुम दलाल भी मौजूद रही। जींद के निडाना गांव के एक निजी स्कूल में किसानों और कीटों के बीच पिछले लगभग 4 दशकों से चली आ रही लड़ाई की सुलह करवाने को लेकर खाप महापंचायत का आयोजन किया गया। इस महापंचायत में किसानों का पक्ष जहां खुद किसानों ने रखा वहीं कीटों का पक्ष भी उन महिलाओं और पुरुषों ने रखा, जो पिछले लगभग 8 वर्षों से कपास और धान की फसलों में कीटों पर शोध कर रहे हैं और फसलों में बिना कीटनाशक दवाओं का प्रयोग किए अच्छी पैदावार ले रहे हैं। कीटाचार्य किसानों ने महापंचायत में बेजुबान कीटों की पैरवी करते हुए बताया कि कीट न तो हमारे मित्र हैं और न ही दुश्मन हैं। कीट तो फसलों में अपना जीवन चक्र चलाने के लिए आते हैं और पौध अपनी जरूरत के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार की गंध छोड़कर किसानों को अपनी रक्षा के लिए बुलाते हैं।

उन्होंने बताया कि उनके 8 वर्षों के अनुभव के दौरान कभी की कोई कीट फसल में नुक्सान पहुंचाने के आर्थिक स्तर को पार नहीं कर पाया है, जब कीट हमारी फसलों को कोई नुक्सान नहीं पहुंचा रहे हैं तो फिर उन्हें बिना कसूर किसानों द्वारा फसलों में कीटनाशक दवाओं का छिड़काव कर क्यों मारा जा रहा है। खाप चौधरियों व न्यायिक कमेटी ने जब अन्य किसानों इसे लेकर सवाल किए तो किसानों ने बताया गया कि उन्हें कीटों के बारे में इस तरह की जानकारी नहीं थी।

वह तो अज्ञानतावश फसल में नुक्सान के डर से इन बेजुबान कीटों को मार रहे हैं। दोनों पक्षों की सुनवाई के बाद न्यायिक कमेटी व खाप इस निश्कर्ष पर पहुंचे कि इस लड़ाई में न तो किसानों का दोष है और न ही कीटों का कोई तीसरा पक्ष किसानों के भोलेपन का फायदा उठाकर इस लड़ाई को बढ़ावा दे रहा है।

ज्यूरी ने दिया अपना फैसला

ज्यूरी के सामने किसान और कीट दोनों का पक्ष अछी तरह से रखे जाने के बाद जस्टिस एस.एन. अग्रवाल की अध्यक्षता वाली ज्यूरी ने मौके पर यह व्यवस्था दी कि कई दशकों से किसानों और कीटों के बीच चली आ रही जंग में कीट बिना कसूर मरता रहा और किसान अपने भोलेपन के चलते अपनी जेब ढीली कर बेजुबान और बेकसूर कीटों को मारता रहा। दोनों में किसी का दोष नहीं था। इसके चलते ज्यूरी ने दोनों पक्षों के बीच समझौता करवा दिया। इसमें किसान ने यह तय किया कि अब वह अपनी फसलों में बिना वजह अंधाधुंध तरीके से कीटनाशक दवाओं का छिड़काव नहीं करेगा। साथ ही महापंचायत ने केंद्र सरकार के लिए एक प्रस्ताव भी पारित किया जिसमें मांग की गई कि सरकार डा. सुरेंद्र दलाल के नाम से नई कृषि नीति बनाए और उस कृषि नीति में इस मुहिम को शामिल करे की फसलों पर कीटनाशक दवाओं का अंधा धुंध छिड़काव नहीं हो। पूरे देश में जहर मुक्त थाली को लेकर सरकार एक बड़ा अभियान चलाए।

महापंचायत की मुहिम रंग लाई तो किसान होगा मालामाल

हरिभूमि न्यूज. जींद

जींद के गांव निडाना में शुक्रवार को हुई महापंचायत की मुहिम यदि रंग लाई तो जल्द ही किसान मालामाल हो जाएगा। साथ ही किसानों और कीटों के बीच चली आ रही जंग को लेकर भी मंथन हुआ। यहां किसानों को कीटानाशकों से नुकसान बताए गए।

कपास और धान की फसल को कीटों से होने वाले नुकसान को रोकने के लिए किसानों द्वारा इन फसलों पर

■ एक साल में जिले में होता है 20 करोड़ का कारोबार

कीटनाशक दवाओं के छिड़काव को रोकने को लेकर शुक्रवार को जींद के निडाना गांव में हुई खाप महापंचायत का फैसला प्रभावी साबित हुआ तो जींद जिले में करोड़ों रुपए के कीटनाशक

जींद। निडाना गांव में कीटों की जान बचाने के लिए हुई महापंचायत में आई महिलाएं।

दवाओं के कारोबार को बड़ा झटका लगेगा। यह उन मल्टीनैशनल कंपनियों के लिए भी तगड़ा झटका होगा, जो किसानों को कीटनाशक दवा बेच कर पूरे प्रदेश से अरबों रुपए हर साल अपनी तिजोरी में भर रही हैं। इसके साथ ही अभियान की सफलता से थाली को जहर मुक्त बनाने में भी मदद मिलेगी। यह खुद खाप पंचायतों के किसानों पर असर को भी साबित करेगा। शुक्रवार को जींद के निडाना गांव के एक निजी स्कूल में पूरी अदालत जैसी व्यवस्था की गई थी। इसमें एक तरफ खुद किसान बैठा था, जो दशकों से कपास और धान की अपनी फसल को कीड़ों के प्रकोप से बचाने के लिए फसलों पर कीटनाशक दवाओं का अंधाधुंध छिड़काव करता आ रहा है। उसके सामने फसलों पर मंडराने वाले कीटों के प्रतिनिधि के रूप में उनके ही किसान भाई बैठे हुए थे। इन दोनों पक्षों के बीच दशकों से चली आ रही जंग के तमाम कारणों और परिणामों को खाप पंचायतों के चौधरियों के सामने ठीक उसी तरह रखा गया, जिस तरह किसी अदालत में रखा जाता है। किसान के सामने यह बात रखी गई कि वह बिना वजह फसलों पर कीटनाशक दवाओं का छिड़काव कर बेजुबान और निर्दोष कीटों को मार रहा है। इसमें खुद किसान का बहुत पैसा बेकार जा रहा है। किसान को यह बात समझ आ गई और उसने मान लिया कि वह अब कपास और धान की फसल पर कीटनाशक दवाओं का अंधाधुंध छिड़काव नहीं करेगा। कीटों की तरफ से कहा गया कि वह निर्दोष हैं, उनके कारण किसानों की फसल को नुकसान नहीं होता। फसलों में मित्र और दुशमन कीटों के बीच इतना अच्छा संतुलन हो गया है।

महापंचायत में दोनों पक्षों को सुना गया

खाप महापंचायत के संयोजक कुलदीप ढांडा ने शुक्रवार को निडाना में कीटों को लेकर देश की पहली ऐसी खाप महापंचायत और महापंचायत द्वारा गठित ज्यूरी के सामने कहा कि कई घंटे की सुनवाई के बाद खाप महापंचायत इस निष्कर्ष पर पहुंची की किसानों और कीटों के बीच दशकों से चली आ रही जंग में कसूर न तो किसान का था और न ही कीटों का। किसान को ज्ञान नहीं था और उसके भोलेपन का फायदा उठा कर किसी तीसरी ताकत ने बेजुबान कीटों को बिना वजह मरवाया। इसमें मुनाफा तीसरी ताकत को हुआ। नुकसान कीटों और किसानों के साथ-साथ उन लोगों को भी हो रहा है, जो थाली में जहर खा रहे है। अब यह जरूरी है कि किसान फसलों में कीटनाशक दवाओं का छिड़काव नहीं करें। निडाना, ललितखेड़ा, निडानी, रूपगढ़ आदि गांवों में किसान कपास की फसल में एक बूंद कीटनाशक दवा का छिड़काव किए बिना पूरी पैदावार कई साल से ले रहे हैं।

20 करोड़ का कारोबार

शुक्रवार को निडाना में खाप महापंचायत द्वारा करवाया गया समझौता सफल रहा तो अकेले जींद जिले में कीटनाशक दवाओं के 20 करोड़ रुपए के कारोबार की कमर पूरी तरह टूट जाएगी। जींद जिले में अकेले कपास और धान की फसल में एक साल में 20 करोड़ रुपए से भी ज्यादा कीमत की कीटनाशक दवाओं का इस्तेमाल किसान कर डालते हैं।

असर की होगी अग्निपरीक्षा

शुक्रवार को जिस तरह पूरे उत्तर भारत की 45 से ज्यादा खाप पंचायतों ने प्रस्ताव पारित कर किसानों को फसलों में दवाओं के छिड़काव नहीं करने को कहा है, खाप महापंचायतों के असर की अग्नि परीक्षा होगी। यह असर गांवों में और वह भी किसान वर्ग में माना जाता है। अगर किसान फसलों में कीटनाशक दवाओं का छिड़काव बंद कर देते हैं तो यह माना जाएगा।

In The Tribune:

Mahapanchayat resolves to shun use of pesticides

http://www.tribuneindia.com/news/haryana/mahapanchayat-resolves-to-shun-use-of-pesticides/44723.html

Content Presentation: **Nidana Heights**, Dated: **21/02/2015**